भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

**लोक सभा**

**अतारांकित प्रश्न सं. 4777**

28 मार्च, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

**वैश्विक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के घटक के रूप में आयुर्वेद**

4777. डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे:
श्री राजेश वर्मा:
श्रीमती शांभवी:
श्री नरेश गणपत म्हस्के:
श्री रविन्द्र दत्ताराम वायकर:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के एक प्रमुख घटक के रूप में बढ़ावा देने के लिए कोई विशेष पहल कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार की विश्व आयुर्वेद कांग्रेस जैसे मंचों के माध्यम से आयुर्वेद में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की कोई योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) समकालीन स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ एकीकृत करने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है;

(घ) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदिक पद्धतियों के बारे में जनजागरूकता और इनकी स्वीकृति बढ़ाने के लिए क्या उपाय कार्यान्वित किए जा रहे हैं; और

(ङ) क्या सरकार का आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल में इसकी प्रभावकारिता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए आयुर्वेद में अनुसंधान और विकास का समर्थन करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

**आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**
**(श्री प्रतापराव जाधव)**

(क) और (ख): जी हां, आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जामनगर तथा मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई), नई दिल्ली और केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), नई दिल्ली के अंतर्गत एक इकाई राष्ट्रीय भारतीय आयुर्विज्ञान संपदा संस्थान (एनआईआईएमएच), हैदराबाद में पारंपरिक चिकित्सा के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोगी केंद्र के लिए पहल की है। आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियों के एक प्रमुख घटक के रूप में बढ़ावा देने के लिए आईटीआरए एक अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद अध्ययन केंद्र (आईसीएएस) संचालित कर रहा है।

जामनगर में डब्ल्यूएचओ वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र (जीटीएमसी) वैश्विक स्वास्थ्य के केंद्र के रूप में उभरेगा; पारंपरिक चिकित्सा में साक्ष्य-आधारित अनुसंधान, प्रशिक्षण और जागरूकता को बढ़ावा देगा। यह वैश्विक स्तर पर साक्ष्य-आधारित पारंपरिक, पूरक और एकीकृत चिकित्सा (टीसीआईएम)

के लिए एक प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में काम करेगा। यह दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा का पहला और एकमात्र वैश्विक बाह्य स्थापित केंद्र (कार्यालय) है।

विभिन्न मंचों के माध्यम से आयुर्वेद में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के संबंध में, आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, होम्योपैथी (आयुष) में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग (आईसी) को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना (सीएसएस) विकसित की है, जिसके तहत आयुष मंत्रालय भारतीय आयुष विनिर्माताओं/आयुष सेवा प्रदाताओं को सहायता प्रदान करता है, जिसमें आयुष उत्पादों तथा सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देना; आयुष चिकित्सा पद्धति के अतंर्राष्ट्रीय संवर्धन, विकास एवं मान्यता को सुगम बनाने; अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हितधारकों के बीच बातचीत और आयुष के बाजार विकास को बढ़ावा देना; विदेशों में आयुष अकादमिक पीठों की स्थापना के माध्यम से शिक्षाविदों और अनुसंधान को बढ़ावा देना और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयुष चिकित्सा पदधतियों के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला/संगोष्ठी आयोजित करना शामिल है। सीएसएस आईसी योजना के विभिन्न घटकों के तहत, आयुष मंत्रालय आयुष उद्यमियों, आयुष औषध विनिर्माण उद्योग, आयुष स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं आदि का समर्थन, भारत में आयुष मंत्रालय द्वारा  भारतीय मिशन/भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई)/भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ(एफआईसीसीआई)/भारत व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ)/एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (एएसएसओसीएचएएम)/ भारतीय औषधि निर्यात संवर्धन परिषद (फार्मेक्सिल) आदि के माध्यम से भारत मे और विदेशों में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों/सम्मेलन/कार्यशालाओं/सेमिनारों/रोड शो/व्यापार मेलों आदि में भागीदारी/आयोजन करता है।

आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए विश्व आयुर्वेद कांग्रेस सहित विभिन्न संगठनों द्वारा आयोजित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों/सम्मेलनों/सेमिनारों/कार्यशालाओं आदि का समर्थन किया है।

(ग) और (ङ): आयुष मंत्रालय ने स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) आयुष वर्टिकल के माध्यम से समकालीन स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ एकीकृत करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) द्वारा स्थापित स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) के तहत आयुष वर्टिकल, आयुष-विशिष्ट जन-स्वास्थ्य कार्यक्रमों की योजना, निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए एक समर्पित संस्थागत तंत्र के रूप में कार्य करता है। यह वर्टिकल जन-स्वास्थ्य, स्वास्थ्य देखभाल, आयुष शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए रणनीति विकसित करने में दोनों मंत्रालयों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) ने एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के अस्पतालों में संयुक्त रूप से एकीकृत आयुष विभागों की स्थापना की है। इस पहल के हिस्से के रूप में, एकीकृत चिकित्सा विभाग की स्थापना की गई है और इसका वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (वीएमसीसी) तथा सफदरजंग अस्पताल एवं लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली में परिचालन किया जा रहा है।

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), जो आयुर्वेद में अनुसंधान के लिए शीर्ष निकाय है, आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ आयुर्वेद के एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक संस्थानों के सहयोग से विभिन्न रोगों के उपचार पर अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की हैं।

सीसीआरएएस ने आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ एकीकृत करने के लिए निम्नलिखित शोध परियोजनाओं के माध्यम से आयुर्वेद के एकीकरण के लाभों और व्यवहार्यता की जांच करने के लिए विभिन्न अनुसंधान अध्ययन किए हैं:

1. ऑस्टियोआर्थराइटिस (घुटने) के प्रबंधन के लिए तृतीयक देखभाल अस्पताल (सफदरजंग अस्पताल नई दिल्ली) में आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ एकीकृत करने की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए परिचालन अध्ययन। अध्ययन पूरा हो गया है।

2. हिमाचल प्रदेश में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (पीएचसी) स्तर पर राष्ट्रीय प्रजनन और बाल स्वास्थ्य सेवाओं में भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) को शुरू करने की व्यवहार्यता। अध्ययन पूरा हो गया है।

3. कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग और स्ट्रोक की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) में आयुष पद्धतियों का एकीकरण। अध्ययन पूरा हो गया है।

4. प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर महाराष्ट्र के चयनित जिले (गढ़चिरौली) के पीएचसी में प्रजनन और बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) में आयुर्वेद उपचार शुरू करने की व्यवहार्यता (प्रसव पूर्व देखभाल (गर्भिणी परिचर्या) के लिए आयुर्वेदिक उपचार की प्रभावशीलता): एक बहु केंद्र परिचालन अध्ययन।

5. इसके अलावा, बाह्य अनुसंधान कार्यक्रम के तहत, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और आयुष मंत्रालय के तहत केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने एकीकृत स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान केंद्रित करते हुए पहचाने गए क्षेत्रों पर अनुसंधान करने के उद्देश्य से एम्स में आयुष-आईसीएमआर एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान उन्नत केंद्र की स्थापना हेतु पहल की है। इस कार्यक्रम के तहत, चार एम्स में चार शोध क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो निम्नलिखित हैं:
    i. एम्स दिल्ली:
        क. गैस्ट्रो-आंत्र विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र
        ख. महिला और बाल स्वास्थ्य में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र
    ii. एम्स-जोधपुर: जराचिकित्सा स्वास्थ्य में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र
    iii. एम्स नागपुर: कैंसर देखभाल में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र
    iv. एम्स ऋषिकेश: जराचिकित्सा स्वास्थ्य में एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए उन्नत केंद्र।

आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए), जो आयुष मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय है, आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में आयुर्वेद की प्रभावकारिता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए स्नातकोत्तर (पीजी) और डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) के छात्रों और संकाय शोधकर्ताओं को आधुनिक चिकित्सा संकाय के साथ सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वर्ष 2019 से कुल 25 एकीकृत अनुसंधान किए गए हैं।

(घ): आयुष मंत्रालय ने आयुष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना (आईसी योजना) विकसित की है। विवरण **बिंदु (क) और (ख)** पर दिए गए हैं।

मंत्रालय आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति सहित आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आयुष में सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) को बढ़ावा देने की केंद्रीय क्षेत्र योजना कार्यान्वित करता है। इसका उद्देश्य, देश भर में आबादी के सभी वर्गों तक पहुंचना है। यह योजना, राष्ट्रीय/राज्य आरोग्य मेलों, योग फेस्ट/उत्सवों, आयुर्वेद पर्व आदि के आयोजन के लिए सहायता प्रदान करती है। मंत्रालय आयुष पद्धतियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मल्टीमीडिया, प्रिंट मीडिया अभियान भी चलाता है।

आयुष मंत्रालय, राष्ट्रीय महत्व के संस्थान, यथा आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) के माध्यम से, घरेलू स्तर पर आयुर्वेदिक पद्धतियों के बारे में जन जागरूकता और स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए नियमित आधार पर विभिन्न जन भागीदारी कार्यक्रम आयोजित करता है।

पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान (एनईआईएएच) ने ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों के बीच स्वास्थ्य जागरूकता के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। एनईआईएएच ने आयुर्वेद और होम्योपैथी को बढ़ावा देने के लिए मेघालय राज्य के पूर्वी खासी हिल्स जिले के स्मित क्षेत्रों में आयुर्वेद और होम्योपैथी में एक परिधीय ओपीडी खोली है। संस्थान ने प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जेएएनएमएएन) कार्यक्रमों के तहत स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किए। संस्थान नियमित रूप से संस्थान के अस्पतालों (ओपीडी और आईपीडी दोनों) में निःशुल्क परामर्श देता है और गांवों, स्कूलों, सरकारी विभागों, सैन्य कर्मियों और सामुदायिक स्तरों पर निःशुल्क चिकित्सा और जागरूकता शिविर आयोजित करता है। राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ, पैनल चर्चाएँ, ऑल इंडिया रेडियो शिलांग में पर अंग्रेज़ी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषा (खासी) में डॉक्टर से मिलिए, दूरदर्शन केंद्र शिलांग में आयुर्वेद पर टीवी टॉक शो आदि का आयोजन किया गया है।

घरेलू स्तर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए, केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) अपने 30 परिधीय संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से सूचना शिक्षा और संचार (आईईसी) गतिविधियों के जरिए आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए नैदानिक देखभाल प्रदान करती है और जागरूकता गतिविधियां चलाती है।

सीसीआरएएस आम लोगों के लिए अंग्रेजी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के माध्यम से आयुर्वेद पद्धति को लोकप्रिय बनाने में लगी हुई है, जिसे राष्ट्रीय/राज्य स्तर के आरोग्य मेलों, स्वास्थ्य शिविरों, प्रदर्शनियों, एक्सपो आदि के माध्यम से व्यापक रूप से वितरित किया जाता है, और सीसीआरएएस आउटरीच कार्यक्रमों जैसे अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) अनुसंधान कार्यक्रम, जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी), आदि के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों में अपने मजबूत 30 परिधीय संस्थानों के माध्यम से वितरित किया जाता है। परिषद की वेबसाइट भी आम तौर पर आईईसी सामग्रियों से युक्त होती है और अन्य महत्वपूर्ण वेबसाइटों के साथ हाइपरलिंक की जाती है जो व्यापक उपयोगिता के लिए जानकारी प्रदान करती हैं।

परिषद के पास तीन पत्रिकाएँ हैं, यथा जर्नल ऑफ ड्रग रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेडीआरएएस), जर्नल ऑफ रिसर्च इन आयुर्वेदिक साइंसेज (जेआरएएस), और जर्नल ऑफ इंडियन मेडिकल हेरिटेज (जेआईएमएच), जो जनता के बीच अनुसंधान के परिणामों का प्रसार करने के लिए सार्वजनिक डोमेन में इलेक्ट्रॉनिक रूप से निःशुल्क उपलब्ध हैं। सीसीआरएएस जनता के लिए आम भाषाओं में अनुसंधान परिणामों के प्रसार के लिए तिमाही आधार पर सीसीआरएएस बुलेटिन भी प्रकाशित कर रही है। अब तक, परिषद ने पुस्तकें, मोनोग्राफ और तकनीकी रिपोर्ट प्रकाशित की हैं, और बड़े पैमाने पर आयुर्वेद के अनुसंधान परिणामों और गुणों का प्रसार करने के लिए उनकी बिक्री या वितरण किया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए, आयुष मंत्रालय के तहत सीसीआरएएस ने अकादमिक पीठ की स्थापना के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न देशों/विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों/संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन/आशय पत्र/ समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।

****